राज
कॉमिक्स
संख्या 0092
आदमखोरों का स्वर्ग
सुपर कमांडो ध्रुव
इस कॉमिक्स के साथ एक स्टीकर
RAJ COMICS
राज कॉमिक्स
BY MANOJ GUPTA
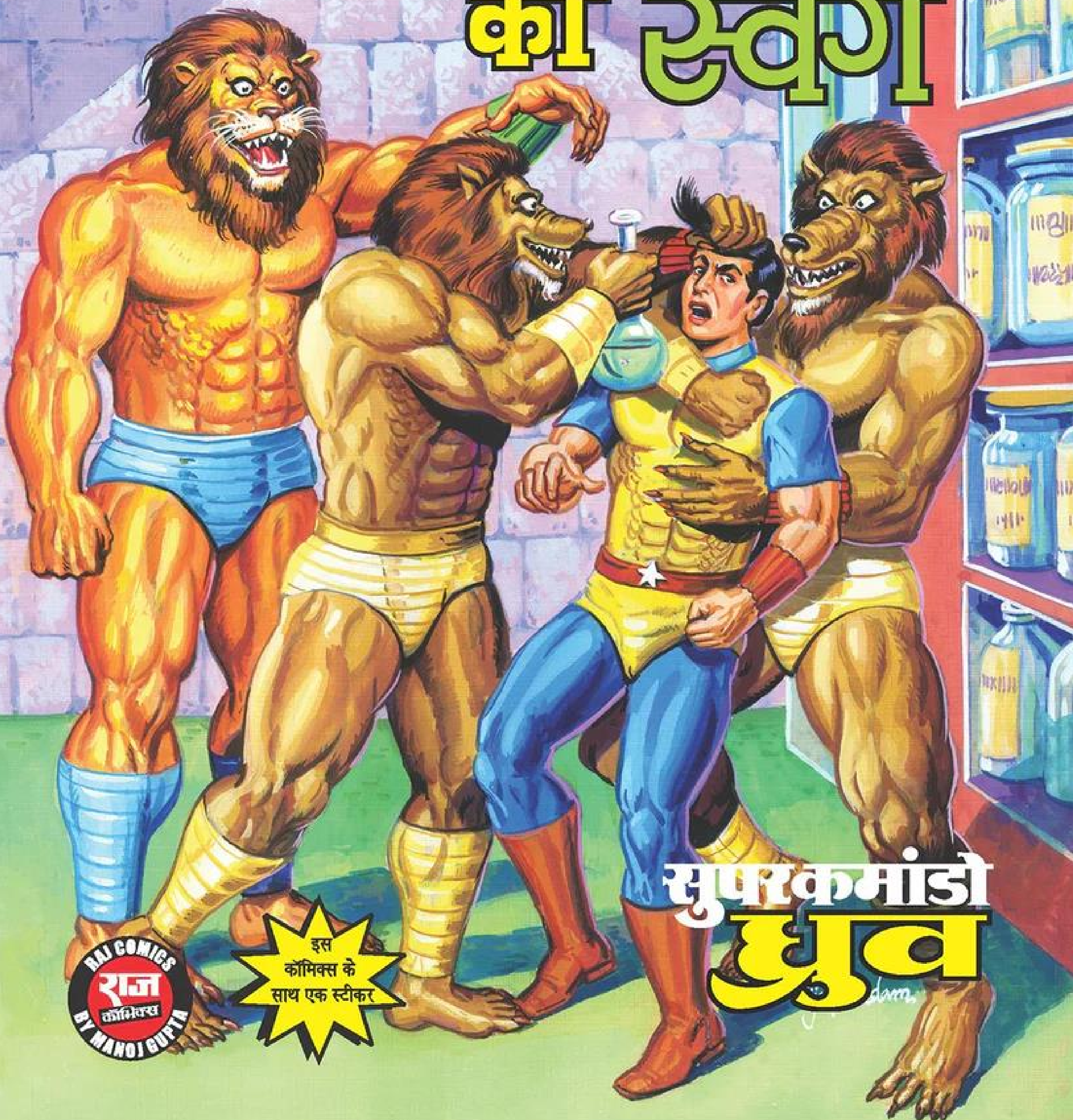
# आदमखोरों का स्वर्ग

कथा व चित्रांकन: अनुपम सिन्हा • सम्पादक: मनीष चन्द्र गुप्त

...और प्रयोग -
सफ़ल हो गया! मैं सफ़ल हो गया!!

अब महामहिम हिटलर को दुनिया का शहंशाह बनने से कोई नहीं रोक सकता!

मैं अपने प्रयोग में पिछले आठ सालों से इतना मशगूल रहा हूं कि मुझे दुनिया की कोई खबर ही नहीं!
आज मैं सालों बाद रेडियो पर समाचार सुनने जा रहा हूं!
किलक्

खर्रर... पट-किर्रर्र... पिप... पिप... समाचार है कि जर्मनी के तानाशाह हिटलर ने...

...आत्महत्या कर ली है!...

जर्मन नाज़ी सेना के वरिष्ठ कमांडरों ने भी इस समाचार की पुष्टि की है! ताज़ा... किर्रर..
तड़ाक

हिटलर! ... महामहिम ने आत्महत्या!
...नहीं...नहीं!! ऐसा नहीं हो सकता!

इस बियाबान उजाड़ द्वीप पर मेरी सालों की मेहनत खाक में मिल गई!
अब मेरा यह आविष्कार किस काम का!?

महामहिम हिटलर ने मुझ जैसे नाचीज़ जर्मन वैज्ञानिक पर भरोसा किया...
...और मैंने सफलता पाने में देर कर दी!...

...बहुत देर!
अब मेरी जिन्दगी का भी कोई काम नहीं! अब मैं भी वही राह चुनूंगा...

...जो महामहिम हिटलर ने चुनी है।
आक
खच
चाकू का लंबा, नुकीला और घातक फल पेट में दूर तक घुसता चला गया।

और बाकी बची एक लाश। एक अनाम जर्मन वैज्ञानिक की, जिस के आविष्कार में दुनिया को हिला सकने की ताकत थी।-

समय बीता। वह द्वीप अब लक्ष द्वीप बन गया। भारत का एक अभिन्न अंग।

और वह प्रयोगशाला घने और बीहड़ जंगलों का एक अभिन्न अंग बन गई।
पेड़ों और लताओं से ढकी। दुनिया की नजरों से ओझल।

और उसके साथ ही दफ़न हो गया उस अनाम वैज्ञानिक का आश्चर्यजनक रहस्य!
परंतु हमेशा के लिए नहीं!
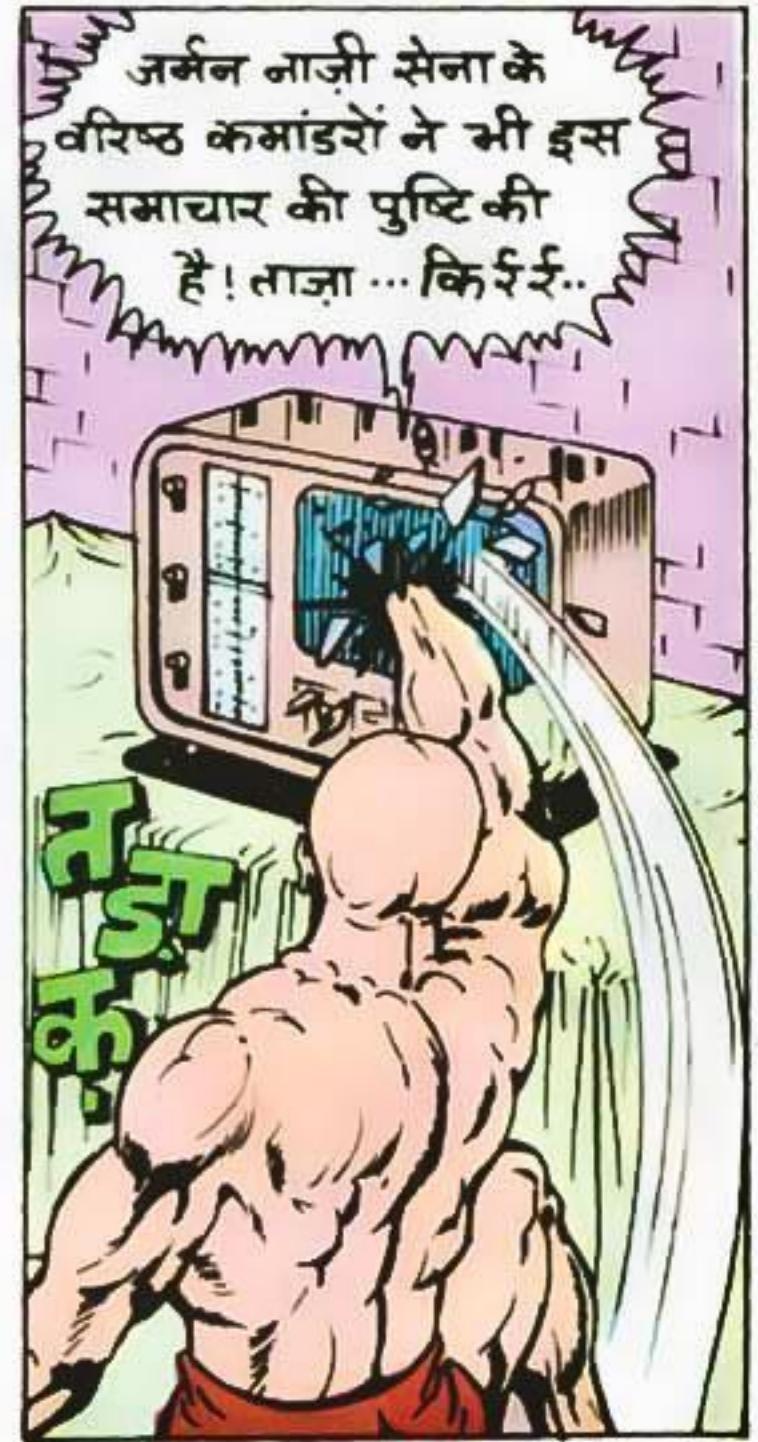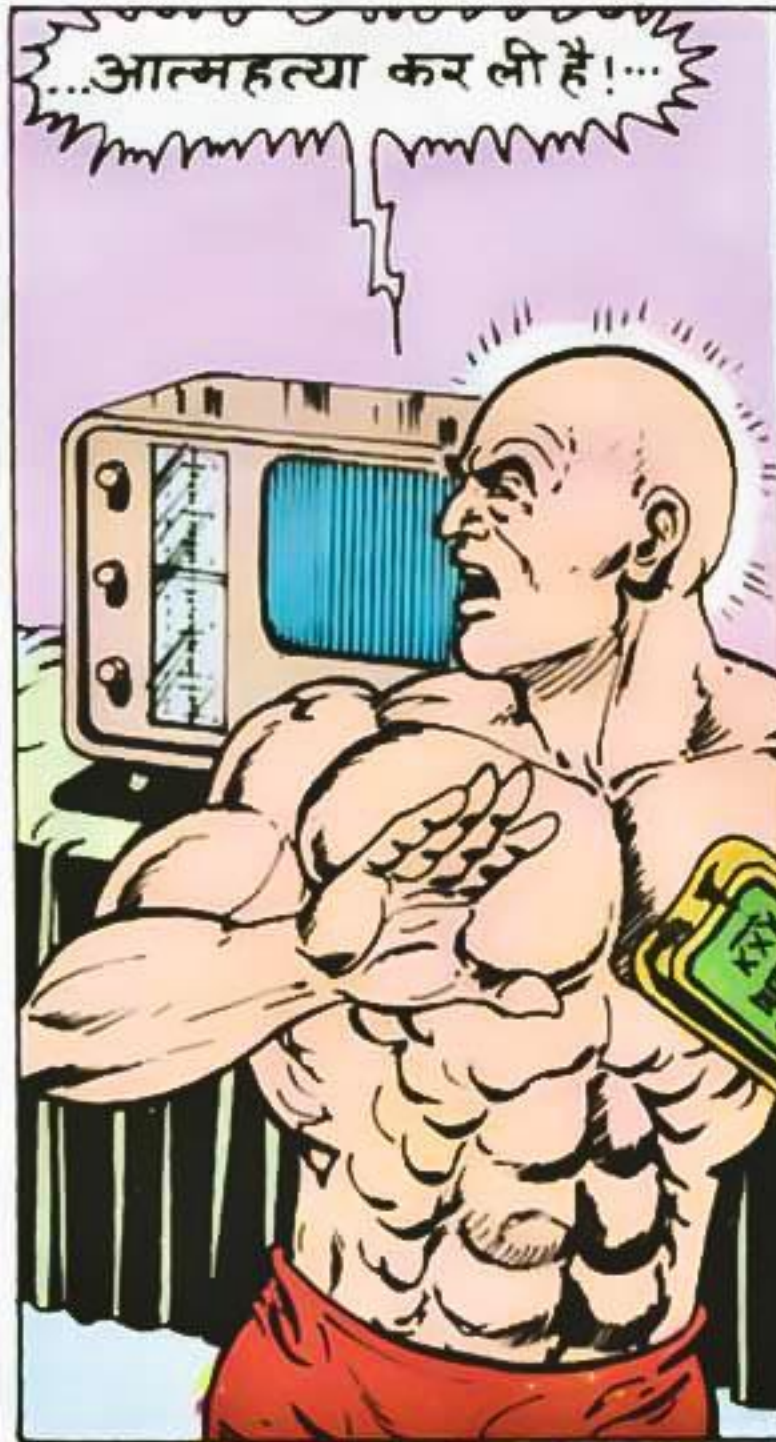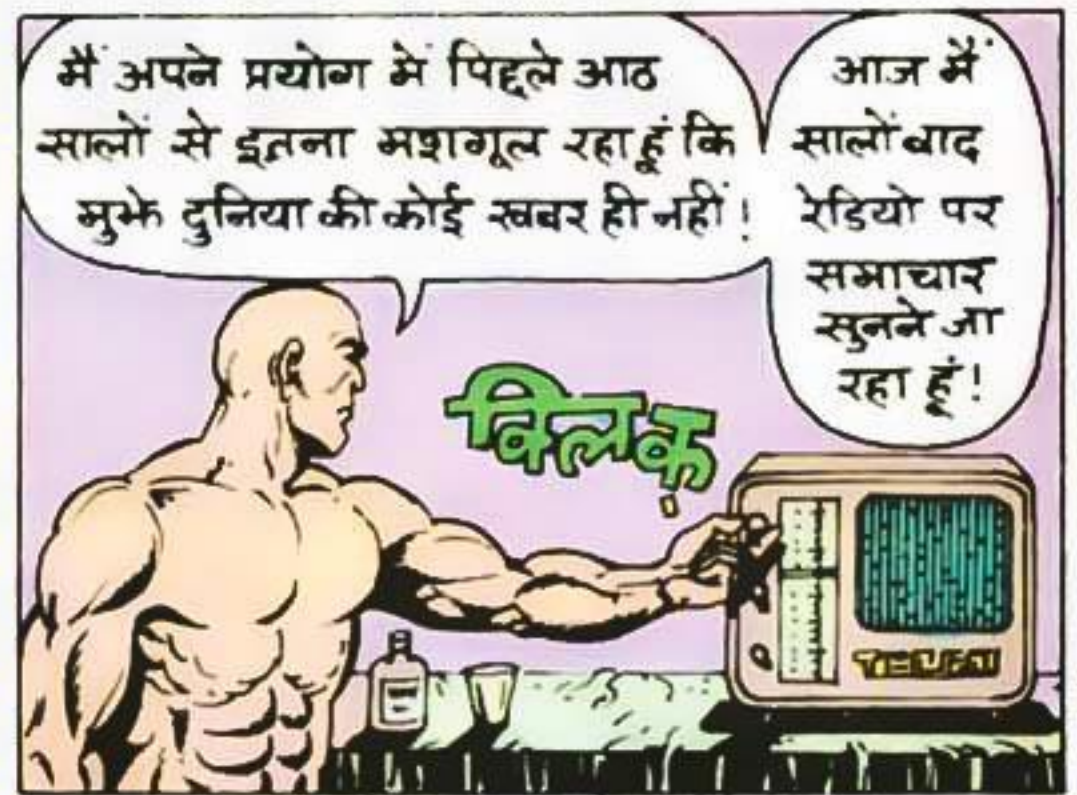
समय - रात के सवा बारह
स्थान - शेगल सिनेमा
फिल्म किंगकांग का आखिरी शो अभी-अभी खत्म हुआ है।
4 SHOWS
DIRECTOR
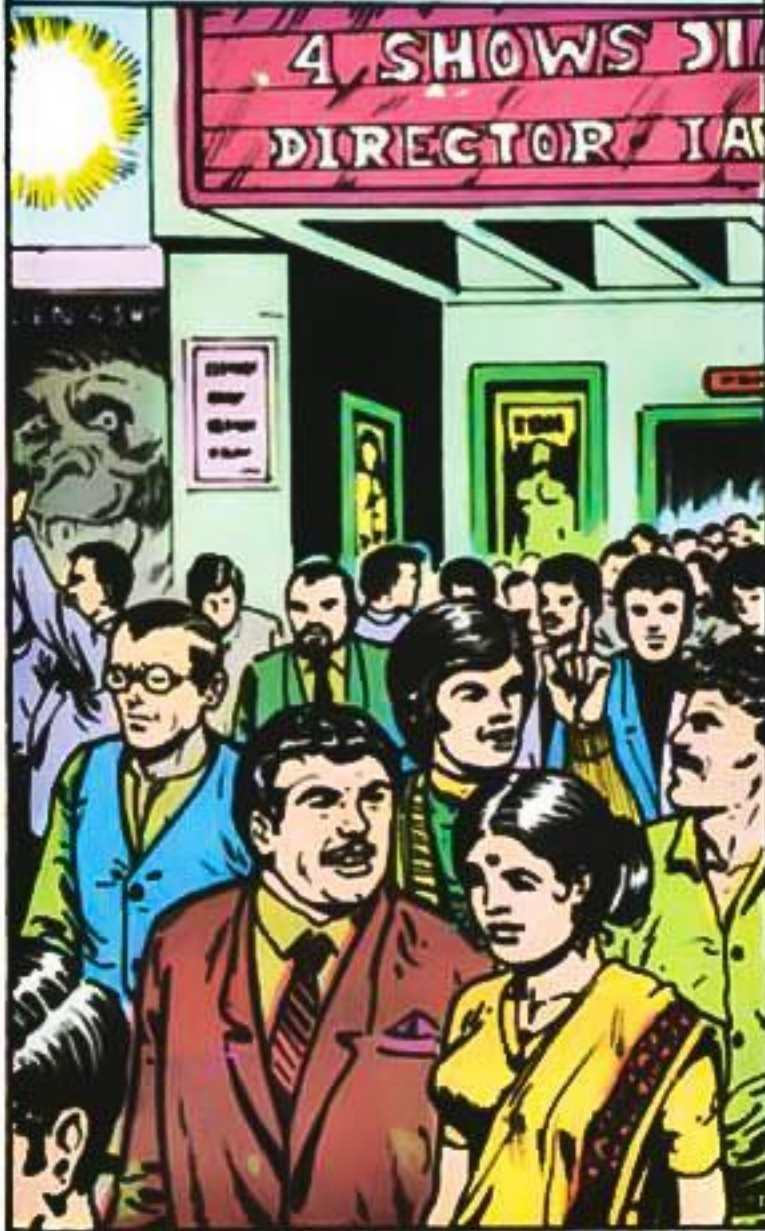
हाउस फुल शो की भीड़ धीरे-धीरे धुंध में गायब होनी शुरू हो गई।
सच मदन! मुझे तो फिल्म देख कर एक दहशत सी हो गई!
पागल हो तुम! ऐसा असलियत में कभी हो ही नहीं सकता!
साठ फुट का गोरिल्ला!!

खैर! धुंध भी घिर रही है, और तुम्हें डर भी लग रहा है!
चलो! मैं तुमको हॉस्टल तक छोड़ आता हूं!...
...अरे आधे घंटे के पैदल का ही तो रास्ता है!

और आधे घंटे बाद जब मदन, शीला को हॉस्टल छोड़कर लौटा-
बाय, मदन!
बाय, शीला!
तो लगभग एक बज रहा था-

धुंध और गहरी हो गई थी।
हा हा! अगर इस वक्त मुझको किंगकांग जैसा कोई अजीब प्राणी मिल जाए तो...

तभी गहरी धुंध को भेदती एक आवाज़ मदन के कानों से टकराई-
मुझसे काम चलेगा! गर्रर्रर्र-
हैं... कौन?

और उस आवाज़ के मालिक की एक ही झलक मदन का खून जमा देने के लिए काफ़ी थी।
उसके सामने जो कुछ भी खड़ा था उसको शब्दों में बयान करना असंभव था!
किसी का खून पिए मुद्दत हो गई! ...इसीलिए मुझको 'गढ़' का कानून तोड़कर यहां आना पड़ा!

आगे मदन सुन नहीं सका। 'अजीब-प्राणी' से मिलने का उसका सारा जोश ठंडा हो चुका था। -
वह पलटा और भागा।

लेकिन धुंध के कारण वह ज्यादा दूर नहीं जा पाया।
?

न... नहीं!

खौफ़नाक कदमों की आहटें धीरे-धीरे अस-हाय मदन के पास आ कर रुक गईं।

नुकीले पंजे मदन की गर्दन में गड़ने लगे।
- और गर्म-गर्म सांसें उसके मुंह से टकराने लगीं।

धीरे-धीरे उसपर बेहोशी छाने लगी। मौत के कदमों की आहट पास आती जा रही थी।

- कि तभी एक मोटर साईकल की धड़धड़ाहट ने उसका ध्यान भंग कर दिया।
धड़
कोई आ रहा है!..
खैर! आने दो! मैं उससे भी निपट लूंगा!

वह अपने बेहोश शिकार को छोड़कर पलटा। और तभी तेज़ रोशनी में उसका पूरा शरीर नहा गया।

परंतु 'भेड़िया-मानव' यह नहीं जानता था कि इस वक्त शहर में एक ही व्यक्ति मोटरसाईकल पर निकलता है! और वह है-
धड़
?
सुपर कमांडो ध्रुव!

मानव जैसा भेड़िया!...या भेड़िये जैसा.. मानव!
ध्रुव ने पलभर में निर्णय लिया-
- और मोटर साईकल की स्पीड अस्सी पर पहुंच गई।

इतनी तेज गति की मोटरसाईकल से टकराने का परिणाम हमेशा ही घातक सिद्ध होता है –
आ ाईईईSSS...
घड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़

हवा में उड़ता हुआ 'भेड़िया-मानव' का शरीर पीछे दीवार से जा भिड़ा –

परंतु उस पर इसका कोई असर नहीं पड़ा।
आश्चर्यजनक!!

ध्रुव समझ गया कि उसका सामना किसी असामान्य प्राणी से है।
गर्र्र
वह सामने से लपकते 'भेड़िया-मानव' से बचने के लिए तेजी से एक तरफ़ हटा।

लेकिन 'भेड़िया-मानव' ध्रुव की आशा से अधिक फुर्तीला निकला –

मैं ताक़त में इससे नहीं जीत सकता!
भेड़िया-मानव दुबारा ध्रुव की तरफ़ बढ़ा।

अगले ही पल ध्रुव का बदन रबर के गुड्डे की तरह मुड़ा-
गर्रर्रर्र
इस लिए अक्ल से काम लेना पड़ेगा!

और भेड़िया-मानव का शरीर हवा में तेज़ी से ऊपर उठा।

ऊपर-हाई-वोलटेज़ के बिजली के नंगे तारों से उसका शरीर टकराया।

वह वापस ज़मीन पर आ गिरा।
उसकी खून पीने की इच्छा खत्म हो चुकी थी।

वह उठा और आश्चर्यजनक गति से एक तरफ़ भागा।
इसका पीछा तो मैं मोटर-साईकल से ही कर पाऊंगा!..

ध्रुव की मोटर साईकल तेज़ी से अपने शिकार के पीछे भागी।
COMICS
यह तो समुद्र की तरफ़ जा रहा है!...

लेकिन दोनों के बीच की दूरी बरकरार रही।
आश्चर्य! यह चीज़ आखिर है क्या!?
मेरा समय खत्म (हफ़) हो रहा है!...

इसको पकड़ना बहुत ज़रूरी है! वर्ना निर्दोष नागरिकों की जान खतरे में पड़ सकती है!

ख्यालों में डूबे ध्रुव की गाड़ी तेजी से मोड़ पर मुड़ी। और -
चोट करारी थी। ध्रुव तुरंत बेहोश हो गया।

आवाज़ सुनकर आगे भाग रहा 'भेड़िया - मानव' पलटा।
आप...
और उसकी आवाज़ उसके गले में ही घुट कर रह गई।

क्योंकि उसके सामने साक्षात मौत खड़ी थी।
हां! मैं, कमीने!

इसने हमारा क़ानून तोड़ा है, जगुआर!...
...तुम इसकी गर्दन तोड़ दो!

एक शिकंजा 'भेड़िया - मानव' की गर्दन पर कसा। एक झटका लगा -
कड़ाक
और वह हमेशा के लिए शांत हो गया।

एक आकृति ने झुक कर लाश के बाएं हाथ से एक पट्टा खोला...

...और 'भेड़िया-मानव' धीरे-धीरे...

...सिर्फ मानव रह गया।

वे दोनों भयावह आकृतियां समुद्र की तरफ़ बढ़ चलीं।

अगली सुबह -
और, डैडी, फिर मैं बेहोश हो गया!
भेड़िए जैसा प्राणी! मोटरसाईकल की टक्कर झेल सकने वाला! दौड़ने की आश्चर्यजनक गति! हाई-वोल्ट बिजली का भी खास असर नहीं!

पर मुझको तुम्हारा पूरा यकीन है!... मैं तुमको सही व्यक्ति से मिलाने की पूरी कोशिश करूंगा!

ध्रुव का ख्याल सही था। गवाह था; लक्षद्वीप का एक छोटा सा द्वीप!

जहां पर -
नरसिंह की जय!
सेवको! जानू खां की गलती का मुआवज़ा उसे मिल चुका है! अभी वह वक़्त नहीं आया कि दुनिया को हमारे अस्तित्व का पता चले! अभी हमको ताक़त इकट्ठी करनी है, हथियार इकट्ठे करने हैं...
...ताकि हम इस द्वीप से पहले इस देश पर, महाद्वीप पर और फिर दुनिया पर राज कर सकें...

...और इस नेक काम में जो भी हमारी राह में आएगा उसे चकनाचूर कर दिया जाएगा!

लेकिन ध्रुव ने अपना अभियान आरंभ कर दिया था।
यहीं पर मेरी मोटरसाईकल गिरी थी! और ये रहे...

...पंजों के निशान!
यानि मैंने कोई सपना नहीं देखा!

लेकिन यह क्या !? शेर के पंजों के निशान !! ...और भेड़िए के निशान गायब !...दो जोड़ी निशान और भी हैं !! तो क्या...तो क्या ...
... भेड़िया शेर बन गया !!!

ओफ़! मैं भी कैसी पागलों जैसी बातें सोच रहा हूं ! परंतु कुछ भी हो, एक बात तो साफ़ है ...

...कि ये दोनों जोड़ी निशान समुद्र की तरफ़ जा रहे हैं !

ध्रुव तट पर पहुंचा, और सबसे पहले जिस चीज़ पर उसकी नज़र पड़ी, वह थी समुद्र के खारे पानी में डूबती - उतराती ...
?
... एक लाश !

ध्रुव तुरंत लाश को बाहर खींच लाया।
!
परंतु एक और आश्चर्य उसका इंतज़ार कर रहा था।

अरे! इसके बदन पर तो वही पोशाक है जो कल 'भेड़िया-मानव' के शरीर पर थी ! ...
यानि... यानि...
नहीं नहीं ! ऐसा कैसे हो सकता है !?

उसने लाश को पलटा और उसकी शंकाएं और बढ़ गईं।
इसकी पीठ पर जलने के तीन निशान हैं ! जैसे बिजली के तारों से जला हो !

कड़ी मानसिक और शारीरिक परीक्षा के बाद -

तड़ाक

तीनों कैडेट अपनी परीक्षाओं में खरे उतरे।

कमांडो पीटर, रेणु और करीम!
तुम तीनों ही अपनी सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुए। मेरी तरफ़ से बधाई!

तुम तीनों को एक महीने की छुट्टी दी जाती है!
आज से ठीक एक महीने बाद तुम लोग यहीं आकर मुझे रिपोर्ट करोगे! डिसमिस!
धन्यवाद, कैप्टेन!

शाम घिरने लगी थी। ध्रुव ने एक पल भी नहीं गंवाया। वह अपने दिमाग में घुमड़ते प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए...
घड़ घड़ घड़ घड़ घड़ घड़ घड़ घड़ घड़

...सीधा उसी स्थान पर पहुंचा जहां से उसने सुबह वह रहस्यमय लाश बरामद की थी।

उसका दिमाग तेजी से काम कर रहा था।
इस तरह के आश्चर्यजनक प्राणी शहर में पहले कभी नहीं देखे गए! वे अवश्य ही समुद्र की तरफ़ से आए होंगे! इस तट से सबसे पास का द्वीप भी पांच सौ कि॰मी॰ दूर है! वे नाव से नहीं आ सकते! बड़े जहाज़ से आने का खतरा वे नहीं उठा सकते! अब सिर्फ एक चीज़ ही बचती है... मोटर बोट!! वे जानवरनुमा प्राणी अवश्य ही किसी मोटर-बोट से आए होंगे!
शक्तिशाली और बड़ी मोटर-बोट!

तभी ध्रुव का ध्यान, किनारे की तरफ़ आती एक नाव ने भंग कर दिया।
ये कौन आ रहे हैं? शायद कुछ मछुआरे मछली पकड़ कर लौट रहे हैं!

ध्रुव का ख़्याल सही था।
वाह! शायद इनसे मेरे सवालों का जवाब मिल जाए!
वह तेजी से उनकी तरफ़ बढ़ा।

उसको ज़्यादा पूछताछ नहीं करनी पड़ी।
हां, साहब! कल रात लगभग दो बजे एक मोटर बोट को हमने दक्षिण-पश्चिम दिशा में जाते देखा था! पर, साहब, कोई जानवर सा आदमी हमने कभी नहीं देखा!

ध्रुव इतने से ही पूर्ण संतुष्ट था।
चलो! मेरा एक ख़्याल तो सही साबित हुआ! यानि हत्या के वक़्त के आसपास ही यहां से एक मोटर बोट समुद्र में गई है!...

...दक्षिण-पश्चिम दिशा में!

और फिर-
इस तट से दक्षिण-पश्चिम दिशा में सिर्फ लक्षद्वीप समूह ही एक ऐसी जगह है, जहां तक मोटर बोट से जाना संभव है!
और इनमें सिर्फ़ एक ही द्वीप ऐसा है जिसपर घने जंगल हैं और आबादी न के बराबर है!...
...यह द्वीप 'नागू' उन प्राणियों के छिपने का सबसे उपयुक्त और संभावित स्थान हो सकता है!

तुम तो जानते ही हो कि यह सारे द्वीप हमारे देश का ही एक अभाज्य अंग हैं!
और अगर तुम्हारा शक सही है, तो हमारे देश की सुरक्षा खतरे में है!
गवर्नर

हां, श्रीमान! उस खतरनाक प्राणी की गर्दन तोड़कर मार डालने वाले भी उसी प्रकार के प्राणी होने चाहिए! ... यानि हमारा सामना
एक ऐसे खतरनाक 'संगठन' से है!

हम्म! ... देखो, ध्रुव, बुरा मत मानना! मुझे तुम्हारी बातों का पूरा यक़ीन है!
लेकिन अधिकतर लोगों को यह बेपर की बात लग सकती है! ...

... इसीलिए 'रक्षा मंत्रालय' को यह मामला देने से पहले हमको कुछ ठोस सबूत इकट्ठे करने पड़ेंगे! ... और इसके लिए मेरे पास तुमसे बेहतर आदमी और कोई नहीं है!

धन्यवाद, श्रीमान!
यह केस मैं अपने हाथ में लेने के लिए तैयार हूं!

और ध्रुव जब कमरे से बाहर निकला तो उसका चेहरा दृढ़ निश्चय से दमक रहा था।
गवर्नर
यह जानते हुए भी कि इस केस की छानबीन की कीमत उसकी मौत भी हो सकती है।

और फिर अगले दिन-लक्षद्वीप में-
हैलीकॉप्टर इस घने जंगल पर उड़ाना ईंधन की बरबादी है, ध्रुव!
'नागू' द्वीप के जंगलों में इन्सान तो क्या, जानवर भी रहने से घबराते हैं!

तो फिर हमारी मंजिल शर्तिया यहीं पर होगी, मि॰ भंडारी!

ध्रुव गलत नहीं था। उसकी मंजिल यहीं पर थी।

नरसिंह! नरसिंह!! स्वामी!
जंगल पर एक हैलीकॉप्टर उड़ रहा है!

क्या!!? ... वह जरूर हमारी टोह लेने आया होगा! यह सब जानू खां की गलती का नतीजा है! ...
...खैर! तुम जाओ! ...
मैं देख लूंगा!

और शाम को जब ध्रुव जंगलों का हवाई-सर्वेक्षण करके लौटा तो एक नई मुसीबत को इंतज़ार करते पाया-
आपको एस॰पी॰ साहब ने तुरंत हैडक्वार्टर में बुलाया है!

पुलिस हैड-क्वार्टर में -
यह केन्द्र शासित प्रदेश है, बच्चे! मुझे जबतक केंद्र-सरकार का सीधा आदेश नहीं मिलता, मैं किसी छानबीन की अनुमति नहीं दूंगा! समझे!
हमारा विभाग वैसे ही काफ़ी ज़्यादा व्यस्त है!...
...परी-कथाओं की छानबीन के लिए हमारे पास वक़्त नहीं है!
नाउ गेट आउट!

निराश ध्रुव बाहर निकला-
... यानि अब मुझको एस॰ पी॰ साहब को संतुष्ट करने के लिए ठोस सबूत जुटाने पड़ेंगे!
POLICE

और यह काम मुझको अकेले ही करना है!... एकदम अकेले!!
अरे!!? ध्रुव यहां पर!?

टैक्सी!
उस मोटरसाईकल का पीछा करो!

लगभग पंद्रह मिनट बाद -
...तो यहां पर रुका है, ध्रुव!
RAMIL
ध्रुव सपने में भी नहीं सोच सकता था कि लक्षद्वीप में भी कोई उसे पहचानता है।

अगला पूरा दिन ध्रुव ने घने जंगलों के नक्शों के गहन अध्ययन में बिताया।

और फिर शाम को जब वह उठा तो पूरे जंगल का नक्शा उसके दिमाग में छप चुका था।

वह फिर से जंगलों की तरफ़ बढ़ चला।
टैक्सी! उस मोटरसाईकल के पीछे चलो!
आइए! जल्दी अंदर बैठिए!

आधे घंटे बाद ध्रुव घने और बीहड़ जंगलों के छोर पर खड़ा था।
पूरा जंगल एक भयावह खामोशी धारण किए हुए था। एक पत्ता तक नहीं खड़क रहा था।

लेकिन ध्रुव ऐसे ही भयानक खतरों के बीच में पलकर बड़ा हुआ था।
और खतरों से भिड़ना उसका शौक था।
हैलीकॉप्टर से मैंने इसी दिशा में लगभग दो कि॰मी॰ अंदर एक जानवरनुमा इंसान देखा था!

अगर मैं भंडारी को उस वक्त यह बताता तो वह मेरी बात को फिर हंसी में उड़ा देता!
ध्रुव अपने ही ख्यालों में उलझा था...
...और उसका पीछा जारी था!
पड़ा

तभी-
जमीन पर गिरे सूखे पत्ते खड़खड़ा रहे हैं! कोई झुंड इधर ही आ रहा है!...
..किसी एक जानवर के चलने से इतने पत्ते नहीं खड़क सकते...
..बेहतर होगा अगर मैं उनके रास्ते से हट जाऊं!

पत्तों के खड़खड़ाने की आवाज़ क्रमश: पास आती गई।
और ध्रुव ने अपने पीछे नज़र न रखने की घातक ग़लती कर दी।

उसका बदन एक विशाल कुंडली में कस गया।...
..उसके सीने की हड्डियां
गने लगीं। सांस रुकने लगी।

ध्रुव ने नज़र उठाई।
हिस्स! ही ही ही हीस्स्स्स!
?
और उसका खून सर्द हो गया...

..लेकिन उसने होश नहीं खोया।
अगर इसका ज़हर मेरे बदन में प्रवेश कर गया...
...तो संसार की कोई भी दवा मुझको नहीं बचा पाएगी!

तीव्र विष से भरे नुकीले दांत ध्रुव की तरफ़ बढ़े।
मौत अगले ही मोड़ पर खड़ी थी।

लेकिन ध्रुव का दिमाग़ आज़ाद था।
सांप की सबसे बड़ी कमज़ोरी उस की पूंछ होती है!
ध्रुव के भारी जूते हवा में उठे और 'सर्प-मानव की पूंछ पर आ गिरे।
'सर्प-मानव' चीख कर पलटा। ध्रुव के सीने पर दबाव डालती उसकी कुंडलियां खुल गईं।

इस मौके का भरपूर फ़ायदा उठाते हुए ध्रुव ने पास की डाल से एक सख़्त और नुकीली टहनी तोड़ ली।

उसका हाथ बिजली सी तेजी से आगे बढ़ा और-
टहनी 'सर्प मानव' के तालू में बैठ गई।...
!
...सर्प-मानव ने तेजी से मुंह बंद करना चाहा...

...लेकिन नुकीली टहनी पैने तीर की तरह उसके तालू को छेदती हुई उसके मस्तिष्क में घुस गई।
आ
उसके मुंह से खून का फ़व्वारा छूट पड़ा।

और तभी वह विशालकाय पेड़ बुरी तरह से हिल उठा।

तो यह है वह 'झुंड' जिसके चलने से इतने पत्ते चरमरा रहे थे!...

कड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़

इस बार ध्रुव के सामने वास्तव में उसकी मौत का फ़रमान था।

इससे पहले कि ध्रुव कूद कर किसी दूसरे पेड़ पर आ सकता, दूसरी टक्कर लगी -

और वह भीमकाय पेड़ जड़
से

बचने का एक ही रास्ता है! कि मैं पेड़ के गिरने की विपरीत दिशा में कूदूं, जिधर...

...यह गैंडा खड़ा है!...
आह!!

स्वामी जानते थे कि तुम अपनी मूर्खता से बाज नहीं आओगे! इसीलिए उन्होंने हम सबको सतर्क कर दिया था!
भारी भरकम पैर ध्रुव को कुचलने के लिए आगे बढ़ा -

परंतु ध्रुव की विद्युत गति ने उसे बचा लिया।
धधमम म

इस तरह इसका सामना ज़्यादा देर तक नहीं किया जा सकता!...
तड़ाक
इसीलिए अब मुझको वही करना पड़ेगा...

...जो मैं नहीं करना चाहता था!
अगले ही पल ध्रुव के हाथ में एक पिस्तौल चमकी-

और पलक झपकते दो गोलियां दगीं...
धांय
धांय
...लेकिन वे बेअसर रहीं।

हा हा! अरे मूर्ख! इन मामूली पिस्तौलों से तो साधारण गैंडों पर भी असर नहीं होगा!

फिर मैं तो 'गैंडा-मानव' हूं!

लगता है ध्रुव को मेरी मदद की ज़रूरत है!
ध्रुव का पीछा कर रही आकृति समझ गई कि मदद का वक़्त आ गया।

लेकिन इससे पहले कि वह आकृति नीचे उतरती-
?
ध्रुव तेजी से एक तरफ भागा-

मुझसे बचकर भागना असंभव है, बच्चे!
'गैंडा-मानव' भी तेजी से ध्रुव के पीछे भागा-

ठीक वैसा ही जैसा मैंने सोचा था! यह बिना सोचे-समझे मेरे पीछे आ रहा है!
...अगर मुझको इस जंगल का नक्शा सही रूप से याद है...

...तो इसके आगे दलदल शुरू हो जाता है!
ध्रुव रुका और पलटा -

रुक गया!! हा हा! तो तुम शांति से मरना चाहते हो! डरो मत! एक सेकेंड में सब ख़त्म हो जाएगा!
वह ध्रुव को पकड़ने लपका...

...लेकिन ध्रुव तेज़ी से एक तरफ़ हट चुका था।

य... यह क्या!? यह... यह तो दलदल है!

अपनी सारी अमानवीय ताक़तों के बावजूद तड़पते 'गैंडा-मानव' का शरीर धीरे-धीरे दलदल में गायब होने लगा।
आ ा ा ा ा
और शीघ्र ही दलदली जमीन ने 'गैंडा मानव' को पूरा निगल लिया।

ध्रुव फिर से अपनी मंजिल की तरफ़ बढ़ चला।
वाह! वाह!! मेरे रिवॉल्वर की गोली गैंडे के शरीर में घुसने को बेताब थी!...

ध्रुव की मंजिल अब सामने थी।
इस घने जंगल में यह आधुनिक इमारत!
और उसके पहरे पर गश्त लगाते ये मानव-पहरेदार!!
अगर इस जंगल में कहीं इन प्राणियों का अड्डा है तो वह यही होगा!...
और इन मानव पहरेदारों से सिद्ध होता है कि ये प्राणी वास्तव में मनुष्य ही हैं!...

...पर उसकी जरूरत नहीं पड़ी!

और ये किसी यंत्र के सहारे ऐसे बने हुए हैं! मैं इस तरह के तीन प्राणियों से मिल चुका हूं! अब सवाल यह है कि...
...वह कौन सी ऐसी वस्तु है जो इन तीनों ही प्राणियों के पास थी!...

सोचो, ध्रुव, सोचो...
परंतु तभी एक गुर्राहट ने उसकी विचारधारा तोड़ दी-
गुर्रर्रर्रर्र! हा हा...

?
मिल गया! मिल गया!!

ध्रुव संभल भी न पाया था कि-
तड़ाक
आह!!

ध्रुव थक गया है! वह शायद इससे न जीत सके!

ध्रुव वास्तव में थोड़ी थकान महसूस कर रहा था।-
उसमें अपनी तरफ़ बढ़ता ख़तरनाक पंजा रोकने तक की ताक़त नहीं बची थी।

कि तभी-
एक मिनट! यह कलाई पर बंधा पट्टा!!

हां! यही तो है वह चीज़ जो उन तीनों के पास थी! ...
ताड़
...बाएं हाथ की कलाई पर बंधा यह पट्टा!

इस ख्याल ने ध्रुव में एक नई शक्ति का संचार कर दिया।
यह शक्ति थी-

सत्य की, न्याय की-
भड़ाक
आऽऽऽSSSSह!!

और दृढ़ विश्वास की।

भेड़िया-मानव में इस शक्ति को सह पाने की ताक़त नहीं थी।
यह तो गया! अब देखना है कि इस पट्टे का क्या रहस्य है?


ध्रुव ने पट्टा खोला, और धीरे-धीरे उसकी आश्चर्यचकित आंखों के सामने...


...भेड़िया-मानव सिर्फ़ मानव रह गया।
तो मेरा ख्याल सही था!
वाह!!! तो यह है इन जानवरों का रहस्य!!


अब देखना यह है कि यह पट्टा मुझपर असर करता है या नहीं!
ध्रुव ने पट्टे का लॉक दबाया।


लेकिन-
कुछ नहीं हुआ!!?


अब सवाल अंदर घुसने का है! और जवाब है गश्त लगाकर इधर आ रहा...
...यानि इस पट्टे के अलावा कोई और चीज़ भी है जो इनको ऐसा प्राणी बनाती है!


...यह पहरेदार!!
तड़.


और दो मिनट बाद जब ध्रुव इमारत की ओर बढ़ा तो उसको पहचानना नामुमकिन था।-
ओफ़! यह 'भेड़िया' इधर ही आ रहा है!...

मिला कहीं?
नहीं!
और ध्रुव बेधड़क अंदर घुसता चला गया।

ओफ्! ध्रुव तो अंदर गया, और यह शैतान पहरे पर खड़ा हो गया! इसके हटने का इंतजार करना बेकार है!...
...वह गश्त लगाता पहरेदार जैसे ही मोड़ पर मुड़ेगा...

..मेरी रिवॉल्वर निशाना ले लेगी!
इनकी खाल इतनी मोटी है कि गोलियां शायद असर न करें!
लेकिन आदमी या जानवर, सबके शरीर में एक ऐसी जगह ज़रूर होती है, जहां गोलियां बेअसर नहीं जातीं!

और वह जगह है; आंखें!
साइलेंसर लगे रिवॉल्वर से एक हल्की सी 'पिट' की आवाज़ हुई...
..निशानेबाज़ का निशाना हमेशा की तरह अचूक था।...

वह आकृति तेज़ी से आगे लपकी।
इससे पहले कि पहरेदार वापस आए...
...मैं इसको ठिकाने लगाकर...

..इमारत के अंदर हो लूं!

लेकिन किस्मत कुछ और ही खेल दिखा रही थी।
अरे! पीटर अभी यहीं तो आकर खड़ा हुआ था! कहां चला गया?

औ... और ज़मीन पर खून के ये धब्बे!
घसीटे जाने के निशान!
ये निशान झाड़ियों की तरफ़ जा रहे हैं!

और झाड़ियों के बीच थी - 'भेड़िया-मानव' पीटर की लाश!

अंदर-
यहां तो अत्याधुनिक शस्त्रों का भारी स्टॉक है! इतने हथियार तो एक सेना के लिए भी ज़्यादा हैं!...
...इन प्राणियों का इरादा क्या है?
TNT

दूसरी तरफ़-
आंख में गोली!? हूं!...'सर्प मानव' नूरा और 'गैंडा-मानव' रासुका भी वापस नहीं आए हैं!...
इन सबका सिर्फ़ एक मतलब है...

...कि ध्रुव यहां आ चुका है!

ध्रुव इस नई आफ़त से बेख़बर था।
'शीत कक्ष' में रखी बोतलों और जारों की लाइन! और ये लेबल!!
हर हिंसक जीव के नाम की एक शीशी या जार है!...
सिर्फ... सिंह के नाम का...

...जार नहीं है! क्योंकि इस दुनिया में सिर्फ एक ही नरसिंह है और एक ही रहेगा!
तु..तुम
आप बोल, नादान! तू इस वक्त दुनिया के होने वाले शहंशाह के सामने खड़ा है!
सीखने में वक़्त लगता है, सेवक! वक़्त लगता है!
पहले इस को इसके असली रूप में लाओ!

तुम्हारी कलाई का पट्टा बता रहा है कि तुमपर इसने असर नहीं किया, हालांकि तुम इसका रहस्य जान चुके हो!
तुमको मैं यह सब इसीलिए बता रहा हूं क्योंकि शीघ्र ही तुम भी हम में से एक बनने जा रहे हो!

इन बोतलों में वे सूक्ष्म जीवाणु क़ैद हैं जिनको वैज्ञानिक 'जीन्स' कहते हैं! इन 'जीन्स' के एक बार मानव शरीर में प्रविष्ट होने के बाद जब यह पट्टा पहना जाता है, तो इस पट्टे में लगे यंत्र उन जीवाणुओं को सक्रिय कर देते हैं और फिर...
...जब तक यह पट्टा चालू रहता है, मानव 'पशु-मानव' बना रहता है!...

...अब तुम बताओ! तुमने 'भेड़िया-मानव' पीटर की आंख में गोली क्यों मारी?
गोली? मैंने उसे कोई गोली नहीं मारी!
खैर! मैं तुमसे बहुत खुश हूं!...

आदमखोरों की भीड़ में घिरा असहाय ध्रुव! लेकिन फिर क्या हुआ? वह ध्रुव के पीछे परछाई की तरह लगी आकृति कौन थी? जानने के लिए पढ़िए खून जमा देने वाला दूसरा और अंतिम भाग —

# स्वर्ग की तबाही